परमेश्वर को जानना : भाग I

परमेश्वर को जानना I: पाठ्यक्रम

टिप्पणियाँ -

सत्र #१:

I. परमेश्वर को जानने का परिचय।
II. परमेश्वर को जानने का शिक्षा:
   क. परमेश्वर को जानने का महत्व।
   ख. परमेश्वर को कैसे जाना जा सकता है?

सत्र #२:

II. परमेश्वर को जानने की शिक्षा:
   ख. परमेश्वर को कैसे जाना जा सकता है? (जारी...)।

सत्र #३:

III. परमेश्वर को जानने के चार पहलू:
   क. परिचय।
   ख. जागरूकता।
   ग. गुण।

सत्र #४:

III. परमेश्वर को जानने के चार पहलू:
   ग. गुण। (जारी...)
   घ. क्रियाएँ।

स्तर #५:

III. परमेश्वर को जानने के चार पहलू:
   ङ. रवैया
   परीक्षा।

परमेश्वर को जानना : भाग I

टिप्पणियाँ -

परमेश्वर को जानना I: परीक्षा

संभावित २० अंक के प्रश्न

१) परमेश्वर के ज्ञान में दो मूलभूत समस्याओं की व्याख्या करें (पृष्ठ. ६, ७)।

२) पवित्रशास्त्र का उपयोग करते हुए, सामान्य प्रकाशन को पाने के विचार को विकसित करें (पृष्ठ.१०, ११)।

३) समझाएँ कि परमेश्वर को जानने में स्मरण रखने और भूलने की प्रक्रियाएँ एक साथ कैसे काम करती हैं (पृष्ठ. ३०, ३१)।

४) गुणों के माध्यम से परमेश्वर को जानने की प्रक्रिया को समझाने के लिए १ यूहन्ना ४ का प्रयोग करें (पृष्ठ. ३३-३५)।

५) उन तीन "प" की सूची बनाएँ जो हमारे परमेश्वर के साथ बिताए समय का वर्णन करते हैं और संक्षेप में प्रत्येक का वर्णन करें (पृष्ठ. ४०, ४१)।

६) अनन्त रवैये की अवधारणा पर चर्चा करें (पृष्ठ. ४६, ४७)।

संभावित १० अंक के प्रश्न

१) परमेश्वर को जानने के महत्व को दिखाने के लिए दो पद्यों का उपयोग करें (पृष्ठ. ४, ५)।

२) परमेश्वर के रहस्य के तीन पहलुओं को सूचीबद्ध करने के लिए इफिसियों का उपयोग करें (पृष्ठ. ५)।

३) यह दिखाने के लिए दो पद्यों का उपयोग करें कि स्वयं परमेश्वर को हमें अपनी पहचान करवानी चाहिए (पृष्ठ. ८)।

४) "प्रकाशन" शब्द को परिभाषित करें (पृष्ठ. ९)।

५) दो या तीन वाक्यों में, प्रगतिशील प्रकाशन के विचार की व्याख्या करें (पृष्ठ. १३)।

६) विशेष प्रकाशन के तीन माध्यमों की सूची बनाएँ (पृष्ठ. १५-१७)।

७) अधीनस्थ प्रकाशन क्या है (पृष्ठ. १८, १९)?

८) परमेश्वर के "यहोवा" नामों में से दो चुनें और उन्हें परिभाषित करें और उनका वर्णन करें (कोई पवित्रशास्त्र संदर्भ आवश्यक नहीं; पृष्ठ. २८)।

९) तीन नकारात्मक कार्यों की सूची बनाएँ जो परमेश्वर को जानने में बाधा डालते हैं (पृष्ठ. ३६, ३७)।

१०) यह समझाने के लिए एक पद्य का संदर्भ लें कि कैसे आज्ञाकारिता का सीधा संबंध परमेश्वर को जानने से है (पृष्ठ. ३९)।

११) संक्षेप में समझाएँ कि यूहन्ना ३:३० में पाया गया सिद्धांत कैसे परमेश्वर को जानने को प्रभावित करता है (पृष्ठ. ४४)।

१२) किसी का पश्चाताप का रवैया क्यों होना चाहिए जो परमेश्वर को जानना चाहता है (पृष्ठ. ४६)?

परमेश्वर को जानना : भाग I

टिप्पणियाँ -

I. परमेश्वर को जानने का परिचय।

क. परमेश्वर को जानने का महत्व।

१. मसीही धर्मविज्ञान में परमेश्वर को जानने का विषय सबसे महत्वपूर्ण विषय है।
२. परमेश्वर को जानने का विषय इस बात की समझ प्रदान करता है कि क्या उद्धार की ओर ले जाता है और क्या उद्धार से आता है।
३. अनन्त जीवन परमेश्वर को जानना है (देखें यूहन्ना १७:३)।

चर्चा विषय

यूह. १७:३ के क्या तात्पर्य हैं?

ख. इस पाठ्यक्रम की विषयवस्तुएँ।

१. यह पाठ्यक्रम दो भागों की श्रृंखला का पहला भाग है।

क. यह पाठ्यक्रम परमेश्वर को जानने की **शिक्षा और धर्मविज्ञान** पर केंद्रित है।

ख. परमेश्वर को जानना II परमेश्वर को **जानने** के अभ्यास पर केंद्रित है।

२. यह पाठ्यक्रम दो खंडों में विभाजित है।
क. परमेश्वर को जानने की शिक्षा।
१) पाठ्यक्रम का यह भाग इस प्रश्न पर केंद्रित है कि मनुष्य आरम्भ में परमेश्वर को कैसे जानता है।

२) पाठ्यक्रम के इस भाग की विषयवस्तुओं के उपयोग की अनुमति है और डॉ. जे.आर. विलियम्स की शिक्षाओं पर आधारित है, जो रीजेंट विश्वविद्यालय में धर्मविज्ञान के प्रोफेसर हैं।[१]

टिप्पणियाँ -

ख. परमेश्वर को जानने का धर्मविज्ञान।

१) पाठ्यक्रम का यह भाग यह समझने के लिए एक व्यवस्थित तरीका विकसित करता है कि कैसे मसीही परमेश्वर के विषय में अपने ज्ञान में वृद्धि करते हैं।

२) पाठ्यक्रमों के इस भाग को "परमेश्वर को जानने के मार्ग (या पथ) पर चार पहलू" कहा जाता है।

II. परमेश्वर को जानने की शिक्षा।

क. परमेश्वर को जानने का महत्व।

१. मानव प्रतिबिंब में

क. इतिहास हमें दिखाता है कि मनुष्य हमेशा परमेश्वर के ज्ञान के प्रश्न में व्यस्त रहा है।

ख. भले ही इस प्रश्न का उत्तर धर्म या दर्शनशास्त्र के माध्यम से खोजा गया हो, तथ्य यह है कि मनुष्य ने हमेशा इस प्रश्न पर विचार किया है कि कैसे परमेश्वर को अपनी सबसे बड़ी प्राथमिकता के रूप में जाना जाए।

ग. अनिवार्य रूप से, मनुष्य में कुछ ऐसा है जो इस सर्वोच्च ज्ञान तक पहुँचता है।

चर्चा विषय

क्या आप उन तरीकों के विषय में सोच सकते हैं जिनसे मनुष्य (मसीही और गैर-मसीही दोनों) वैकल्पिक धार्मिक प्रथाओं, दर्शनशास्त्र और विज्ञान के माध्यम से परमेश्वर को जानना चाहता है?

टिप्पणियाँ -

२. वचन में।

क. मानवीय दृष्टिकोण से देखा जाने वाला महत्व।

१) अय्यूब की पुकार पर ध्यान दें (अय्यूब २३:३)।

२) फिलिप्पुस के अनुरोध में उसके हृदय पर ध्यान दें (यूहन्ना १४:८)।

ख. अलौकिक दृष्टिकोण से देखा जाने वाला महत्व।

१) परमेश्वर के ज्ञान के महत्व के विषय में परमेश्वर की क्या राय है (देखें यिर्म. ९:२३, २४)?

२) परमेश्वर की परम इच्छा और अभिप्राय क्या है (देखें यशा. ११:९ और यिर्म. ३१:३४)?

३) परमेश्वर अपने लोगों से किसी भी चीज़ से अधिक क्या चाहता है (देखें होशे ६:६ और मत्ती २३:२३)?

ग. परमेश्वर के ज्ञान की कमी के परिणामस्वरूप होने वाली त्रासदी। (यशा. १:२-७ और होशे ४:१-६) में दिए विचार की प्रगति का अनुसरण करें।

ख. परमेश्वर को कैसे जाना जा सकता है?

१. परमेश्वर का रहस्य।

क. सबसे पहले, हमें यह समझना और स्वीकार करना चाहिए कि परमेश्वर को ठीक उसी प्रकार से नहीं जाना जा सकता है जिस प्रकार से अन्य चीजों या व्यक्तियों को जाना जा सकता है (देखें १ राजा ८:१२)।

ख. परमेश्वर के कार्यों में हमेशा रहस्य का एक निश्चित पहलू सम्मिलित होता है।

१) "उसकी इच्छा का रहस्य" है (इफि. १:९)।

२) "मसीह का रहस्य" है (इफि. ३:४)।

३) "सुसमाचार का रहस्य" है (इफि. ६:१९)।

टिप्पणियां —

ग. दो समस्याएँ हैं जो परमेश्वर को जानने के "रहस्य पहलू" में जुड़ती हैं।

१) परमेश्वर असीम है और मनुष्य सीमित है।

क) सीमित असीम तक नहीं पहुँच सकता। मनुष्य, स्वयं में, परमेश्वर को जानने में सक्षम नहीं है (देखें अय्यूब ११:७ और ३७:२३)।

ख) यह सच्चाई यशा. ५५:८, ९ में स्पष्ट रूप से बताई गई है।

ग) १ कुरिं. १:२१ में इस सत्य के स्पष्ट समर्थन पर भी विचार करें।

२) परमेश्वर पवित्र है और मनुष्य पापी है।

क) मनुष्य का पाप उसे परमेश्वर को जानने से रोकता है। एक अर्थ में यह समस्या पहली समस्या से भी अधिक गंभीर है।

ख) यशा. ८:१७ के संदर्भ का अध्ययन करें।

चर्चा विषय

पापी मनुष्य के संबंध में एक पवित्र परमेश्वर की समस्या को समझाने के लिए निम्नलिखित आरेख का प्रयोग करें।

शुद्धता शुद्धता को देख सकती है (मत्ती ५:८)	**अशुद्धता अशुद्धता को देख सकती है (नीति. १७:४)**
शुद्धता अशुद्धता को नहीं देख सकती (हब. १:१३)	अशुद्धता शुद्धता को नहीं देख सकती (नीति. १७:२०)

चर्चा विषय

निम्नलिखित आरेख का उपयोग इस चर्चा को बढ़ावा देने के लिए करें कि परमेश्वर उन समस्याओं पर कैसे विजय प्राप्त करता है जिनका सामना मनुष्य परमेश्वर को जानने की अपनी खोज में करता है।

परमेश्वर को जानना : भाग I

टिप्पणियाँ -

रहस्य परमेश्वर और मनुष्य के बीच के अंतर से उत्पन्न होता है

परमेश्वर	पुरुष
असीम	परिमित
असीमित	सीमित
अनन्त	अस्थायी
सिद्ध	आंशिक

१ कुरिं. १३:१०

जब सिद्ध आता है, तो आंशिक को हटा दिया जाएगा

१ कुरिं १३:१० सच क्यों है?

क्योंकि परमेश्वर को जानने की प्रक्रिया यीशु के स्वरूप में रूपांतरित होने की प्रक्रिया है। यह प्रक्रिया प्रकाशन या यीशु को देखने के माध्यम से होती है (अध्ययन करें २ कुरिं ३:१८)। इस प्रकार १ कुरिं. १३:१२ आमने-सामने देखने की अवधारणा को पूर्ण ज्ञान की अवधारणा से जोड़ता है। मनुष्य परमेश्वर को नहीं जान सकता। परमेश्वर को स्वयं को ज्ञात करवाना होगा। वह प्रकाशन के माध्यम से ऐसा करता है।

१ कुरिं. १५:५१

अविनाशी/अमर	पद्य ५३	नाशवान / नश्वर
मौत ने निगल लिया	पद्य ५४	मौत मौजद है
मौत का डंक नष्ट किया	पद्य ५५	मौत के डंक (पाप) का
पाप की शक्ति नष्ट की	पद्य ५६	पाप की शक्ति (व्यवस्था) का अस्तित्व है
परमेश्वर से कोई अलगाव नहीं (रोमियों ६:२३)		परमेश्वर से अलगाव

सब कुछ पूरी रीति से परमेश्वर को जानने की ओर बढ़ रहा है। समस्या समाधान की ओर बढ़ रही है। अंत में हम बदल जाएंगे और हम परमेश्वर को पूरी रीति से जान जाएँगे। इस बीच हमें बदला जा रहा है और हम परमेश्वर को आंशिक रूप से जानते हैं। प्रकाशन के माध्यम से हम अब परमेश्वर को जान सकते हैं। जब हम परमेश्वर को देखते हैं, हम अब अनन्त जीवन का अनुभव करते हैं (समीक्षा यूहन्ना १७:३)।

टिप्पणियाँ -

घ. परमेश्वर ने उद्धार प्रदान किया है जो हमें उसे जानने में सक्षम बनाता है।

१) बाधाओं के होते हुए हम परमेश्वर को कैसे जान सकते हैं?

२) हम स्वयं परमेश्वर को नहीं जान सकते। परमेश्वर को स्वयं अपने आप को ज्ञात करवाना चाहिए।

क) वह हमें चुनता है। हम उसे नहीं चुनते (यूह. १५:१६)।

ख) वह हमें ढूंढता है। हम उसे नहीं पाते (लूका १५:४)।

ग) वह हमें खींचता है। हम उसके पास नहीं आते (यूह. ६:४४)।

घ) यह उसकी इच्छा है। यह हमारी इच्छा नहीं है (यूह. १:१३)।

३) मनुष्य के लिए इन सत्यों को स्वीकार करना कठिन है। इसका अर्थ है कि यीशु सारी मानवजाति के लिए ठोकर का कारण है; केवल उसके द्वारा ही मनुष्य परमेश्वर को जान सकता है। परमेश्वर सभी अच्छी चीजों का स्रोत है (याकूब १:१७)। वह अल्फा और ओमेगा, आदि और अंत है (प्रकाशितवाक्य १:८)।

४) यहाँ तक कि उसे जानने की क्षमता भी उसी से आरम्भ होती है। परमेश्वर स्वयं का ज्ञान प्रदान करता है क्योंकि उसे स्वयं का ज्ञान प्रदान करना चाहिए। कोई और तरीका नहीं है जिससे सीमित और पापी मनुष्य उसे जान सकता है। परमेश्वर को प्रकाशन प्रदान करना अवश्य है।

५) परमेश्वर का का सर्वोत्तम प्रकाशन यीशु मसीह है। मसीह उन दोनों समस्याओं का समाधान करता है जो मनुष्य को परमेश्वर को जानने से रोकती हैं।

मनुष्य की समस्या: परमेश्वर असीम है और मनुष्य सीमित है।

मसीह में समाधान: यीशु सीमित बन गया।

देहधारण के द्वारा परमेश्वर जानने योग्य और मनुष्यों के लिए दृश्यमान हो गया (यूहन्ना १४:७)। परमेश्वर स्वयं को मसीह में इस प्रकार प्रकट करता है कि मनुष्य उसे समझ सकता है और उससे संबंधित हो सकता है (फिलि. २:७)।

टिप्पणियाँ -

मनुष्य की समस्या: परमेश्वर पवित्र है और मनुष्य पापी है।

मसीह में समाधान: यीशु पाप बन गया।

प्रायश्चित के द्वारा परमेश्वर जानने योग्य और मनुष्यों के लिए दृश्यमान हो गया (२ कुरिं. ५:२१)। परमेश्वर स्वयं को मसीह में इस प्रकार प्रकट करता है कि मनुष्य उसे समझ सकता है और उससे संबंधित हो सकता है (इब्रानियों ४:१५, १६)।

२. परमेश्वर को प्रकाशन से जाना जाता है।

क. प्रकाशन का परिचय।

१) "प्रकाशन" का अर्थ है परदे को हटाना।

२) यूनानी में, शब्द है: "एपोकलुप्सिस" (जिसका अर्थ है उजागर करना)।

३) खुलासा या प्रकाशन स्वयं परमेश्वर द्वारा किया जाता है। यह परमेश्वर का स्वयं का प्रकटीकरण है (देखें मत्ती १६:१७, यूह. १:१३ और यूह. ६:४४)।

४) रहस्य और प्रकाशन स्वाभाविक रूप से जुड़े हुए हैं।

क) दानि. २:१९; इफि. ३:३; और कुलु. १:२६ पर ध्यान दें।

ख) विचार करें कि मरकुस ४:११, १२ बिना प्रकटीकरण के परमेश्वर के रहस्यों को जानने के मनुष्य के प्रयास की निरर्थकता को कैसे दर्शाता है।

ख. सामान्य प्रकाशन।

१) सामान्य प्रकाशन का माध्यम।

क) परमेश्वर का सामान्य प्रकाशन आकाश और पृथ्वी के माध्यम से प्रकट होता है।

(१) आकाश: सूर्य, चंद्रमा, तारे, आदि।

(२) पृथ्वी: समुद्र, पहाड़, जंगल, फसल, आदि।

टिप्पणियाँ -

चर्चा विषय

निम्नलिखित पद्यों का उपयोग इस बात पर विचार करने के लिए करें कि कैसे परमेश्वर अपनी सृष्टि के माध्यम से स्वयं को प्रकट करता है:

भज. १९:१, २; रोमि. १:२०; और प्रेरितों के काम १४:१७

ख) मानवजाति सामान्य प्रकाशन को प्राप्त करती है और व्यक्त करती है।

(१) मनुष्य को परमेश्वर के स्वरूप में बनाया गया था (उत्पत्ति १:२६), और इसलिए वह परमेश्वर का प्रतिबिंब है।

(२) मनुष्य तर्क कर सकता है। उसके पास नैतिकता की भावना है (रोमियों २:१५)। उसे सृष्टि पर अधिकार दिया गया है। उसकी स्वतंत्र इच्छा है।

ग) इतिहास सामान्य प्रकाशन को व्यक्त करता है।

(१) इतिहास वास्तव में **उसकी कहानी** है, वह कहानी जो परमेश्वर की है। इस प्रकार, उसमें परमेश्वर प्रकट होता है।

(२) उदाहरण के लिए, राष्ट्रों के उत्थान और पतन में परमेश्वर का न्याय प्रकट होता है।

२) सामान्य प्रकाशन की विषयवस्तुएँ।

क) परमेश्वर की अनन्त शक्ति और ईश्वरत्व (रोमि. १:२०)।

ख) परमेश्वर की भलाई और मनुष्यों के लिए चिन्ता (भज. १४५:१५, १६ और मत्ती ५:४५)।

ग) परमेश्वर की धार्मिकता (नीति. १४:३४ और रोमि. १:३२)।

३) सामान्य प्रकाशन को ग्रहण करना।

क) सामान्य प्रकाशन की कमजोरी को देखने के लिए रोमि. १:१८-३२ का अध्ययन करें। अपने पाप के कारण, मनुष्य सामान्य प्रकाशन को अस्वीकार करता है।

(१) मनुष्य सत्य को दबाता है, हालाँकि परमेश्वर ने इसे स्पष्ट कर दिया है (पद्य १८, १९)।

(२) मनुष्य परमेश्वर का अनादर करता है और परमेश्वर के प्रति आभार व्यक्त नहीं करता (पद्य २१)।

(३) इस प्रकार, मनुष्य अपनी सोच में व्यर्थ है और उसका हृदय अंधकारमय है (पद्य २१)। वह परमेश्वर को नहीं जान सकता। सामान्य प्रकाशन पर्याप्त नहीं है। मनुष्य को कुछ और चाहिए।

टिप्पणियाँ -

पूरी प्रक्रिया की त्रासदी मनुष्य की दुष्टता की इच्छा के कारण हुई है। इस प्रकार, वह परमेश्वर के विषय में सच्चाई का झूठ के साथ आदान-प्रदान करता है (पद्य २५)। मनुष्य अब परमेश्वर को जानने में सक्षम नहीं है (पद्य २८)।

(५) यह स्मरण रखना चाहिए कि मनुष्य के पास **कोई बहाना नहीं** है (रोमि. १:२०)। वह अपनी पसंद से दोषी है।

ख) प्राकृतिक धर्मविज्ञान की त्रुटि।

(१) प्राकृतिक धर्मविज्ञान कहता है कि मनुष्य सामान्य प्रकाशन के माध्यम से परमेश्वर को जान सकता है।

(२) यद्यपि एक सामान्य प्रकाशन है, मनुष्य की पापपूर्णता उसे उसके द्वारा परमेश्वर को जानने से रोकती है।

(३) यदि मनुष्य पाप रहित होता, तब वह प्राकृतिक धर्मविज्ञान के माध्यम से परमेश्वर को जान सकता था।

लेखक की टिप्पणी:

भजन संहिता (उदाहरण के लिए: ६५:१२, १३; ६६:१-४; ९६:१२, १३; ९७:१, ६) और बाईबल के अन्य भागों में उपयोग की गई प्रतीकात्मक भाषा के विषय में सोचना दिलचस्प है। संभवत: जब आदम पतन से पहले पृथ्वी पर चला (और नए आकाश और नई पृथ्वी में) तब परमेश्वर की प्राकृतिक सृष्टि ने वास्तव में परमेश्वर की महानता को इस प्रकार से बताया जिससे आदम को परमेश्वर को जानने में सहायता मिली (भजन १९:१, २ पर विचार करें)।

यह जानना भी दिलचस्प है कि विशेष प्रकाशन के माध्यम से परमेश्वर का ज्ञान हमें सामान्य प्रकाशन के विषय में अधिक जागरूक होने की अनुमति देता है।

टिप्पणियाँ -

ग. विशेष प्रकाशन।

१) विशेष प्रकाशन की विशेषता।

क) विशेष प्रकाशन विशिष्ट है।

(१) परमेश्वर स्वयं को विशिष्ट लोगों के सामने प्रकट करता है। "परमेश्वर के लोगों" में अब्राहम के भौतिक और आत्मिक वंशज सम्मिलित हैं (गल. ३:७)।

चर्चा विषय

विशेष प्रकाशन कैसे विशिष्ट है, यह समझाने के लिए निम्नलिखित आरेख का उपयोग करें।

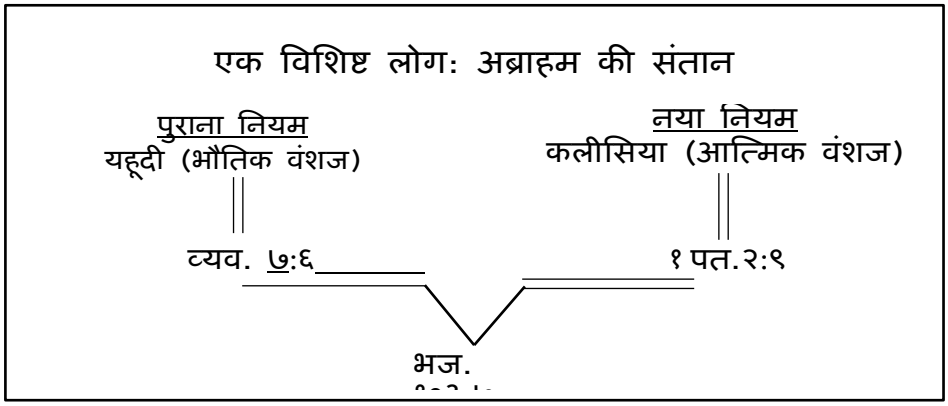

(२) लोगों के एक विशेष समूह को विशेष प्रकाशन क्यों दिया गया है?

(क) क्योंकि परमेश्वर ने "बर्तन कार्य-प्रणाली" का उपयोग करना चुना है, जिसका अर्थ है कि परमेश्वर सभी लोगों के प्रति स्वयं को ज्ञात करने के लिए अपने चुने हुए बर्तनों के माध्यम से काम करता है।

(ख) कुछ को विशेष प्रकाशन दिया जाता है, दूसरों को अलग करने के लिए नहीं, बल्कि दूसरों को सम्मिलित करने के लिए। परमेश्वर विशिष्ट लोगों के **माध्यम से** स्वयं को ज्ञात करता है।

टिप्पणियाँ -

चर्चा विषय

विशेष प्रकाशन पर चर्चा करने के लिए निम्नलिखित आरेख का प्रयोग करें।

उत्प.१२:१-३

आप आशीषित हैं **(मैं स्वयं को तुम पर प्रकट कर रहा हूँ)**

||

क्यों?

||

ताकि अन्य भी आशीषित हो जाएँ **(इसलिए कि मैं तुम्हारे माध्यम से स्वयं को प्रकट कर रहा हूँ)**

ख) विशेष प्रकाशन प्रगतिशील है।

(१) उत्पत्ति से प्रकाशितवाक्य तक

(२) , विशेष प्रकाशन बढ़ता है।

(३) विशेष प्रकाशन की वृद्धि सत्य से असत्य की ओर नहीं है।

(४) यह छोटे प्रकाशन से बड़े प्रकाशन तक है।

(क) इस प्रकार, व्यवस्था नष्ट या प्रतिस्थापित नहीं की गई है। उसकी पूर्ति हुई है।

(ख) परमेश्वर बदलता नहीं है। उसे समझने की हमारी क्षमता बदल जाती है। व्यवस्था नहीं बदलती। व्यवस्था मानने की हमारी क्षमता बदल जाती है।

चर्चा विषय

पुराने और नए नियम में प्रकट किए गए प्रकाशन की प्रगतिशील प्रकृति पर चर्चा करने के लिए पिछली अवधारणा का उपयोग करें।

टिप्पणियाँ -

ग) विशेष प्रकाशन बचाने वाला है।

(१) सामान्य प्रकाशन परमेश्वर को सृष्टिकर्ता और न्यायी के रूप में प्रकट करता है। वह मुक्तिदाता के रूप में प्रकट नहीं हुआ है। इस प्रकार, सामान्य प्रकाशन में बचाने की कोई सामर्थ नहीं है।

(२) विशेष प्रकाशन परमेश्वर को मुक्तिदाता के रूप में प्रकट करता है।

(क) पुराने नियम में, प्रायश्चित बलिदानों, निर्गमन, आदि के माध्यम से (देखें निर्ग. २०:२ और यशा. ४३:३)।

(ख) नए नियम में, यीशु मसीह के माध्यम से।

चर्चा विषय

चर्चा करें कि आप किसी ऐसे को क्या प्रत्युत्तर देंगे जो कहते हैं कि वे एक मसीही हैं, केवल इसलिए कि वे मानते हैं कि परमेश्वर ने दुनिया बनाई है और वह सभी लोगों का न्यायी है।

घ) विशेष प्रकाशन मौखिक है।

(१) सामान्य प्रकाशन मौखिक नहीं है (भज. १९:३)।

(२) विशेष प्रकाशन मौखिक है। सामान्य विशिष्ट और परिभाषित बन जाता है। अप्रत्यक्ष प्रत्यक्ष बन जाता है। गैर-मौखिक मौखिक बन जाता है।

(३) विशेष प्रकाशन परमेश्वर के वचन में मौखिक है।

(क) पुराने नियम के पद्यों में।

(ख) नए नियम के पद्यों में और यीशु मसीह में।

(४) विशेष प्रकाशन वचन धारकों के माध्यम से मौखिक है।

(क) पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं के माध्यम से।

(ख) नए नियम के उद्धारकर्ता, प्रेरितों और कलीसिया के माध्यम से।

टिप्पणियाँ -

ङ) विशेष प्रकाशन व्यक्तिगत है।

(१) पुराने नियम में।

(क) परमेश्वर मूसा को अपना व्यक्तिगत नाम देता है (निर्ग. ३:१-१४)।

(ख) परमेश्वर मूसा के साथ एक मित्र के समान बात करता है (निर्ग ३३:११)।

(ग) वह व्यक्तिगत रूप से शमूएल को प्रकट होता है (१ शमू. ३:२१)।

(२) नए नियम में।

(क) व्यक्तिगत प्रकाशन का चरमोत्कर्ष यीशु मसीह है।

(ख) परमेश्वर ने देह धारण की (यूह १:१४)।

(ग) मनुष्य परमेश्वर को देखता है (यूहन्ना १४:९)।

(३) अंततः, प्रकाशन व्यक्तिगत होना चाहिए, क्योंकि:

(क) प्रकाशन एक व्यक्तिगत प्राणी (मनुष्य) के लिए है।

(ख) यह एक व्यक्तिगत प्राणी (परमेश्वर) की ओर से है।

चर्चा विषय

परमेश्वर के प्रकाशन के मौखिक और व्यक्तिगत होने के विषय में चर्चा को बढ़ावा देने के लिए पिछली अवधारणाओं का उपयोग करें।

२) विशेष प्रकाशन का माध्यम।

क) विशेष प्रकाशन पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं के द्वारा व्यक्त किया गया था।

(१) भविष्यवक्ता की एक अद्वितीय पदवी होती थी। भविष्यद्वक्ताओं के विशेष प्रकाशन के विशेष संचारक होने के संदर्भ में आमोस ३:७ को देखें।

टिप्पणियाँ -

(२) भविष्यवक्ता महत्वपूर्ण था।

(क) भविष्यवक्ता का उपयोग इतिहास की घटनाओं को अलौकिक दृष्टिकोण में डालने के लिए किया गया था। ऐतिहासिक घटनाओं की व्याख्या भविष्यवक्ताओं द्वारा परमेश्वर के उद्देश्यों के विशेष प्रकटीकरण के रूप में की गई थी।

(ख) भविष्यवक्ता ने कई अलग-अलग तरीकों से और कई अलग-अलग रूपों (कविता, व्यवस्था, इतिहास, दृष्टांत, नीतिवचन) में परमेश्वर के विशेष प्रकाशन की घोषणा की। भविष्यवाणी का महत्व रूप में नहीं परन्तु संदेश में होता है।

(३) भविष्यवक्ता का उद्देश्य यीशु मसीह के बड़े प्रकाशन की तैयारी करना था (यूह. ५:३९)।

ख) विशेष प्रकाशन यीशु के द्वारा प्रकट होता है।

(१) विशेष प्रकाशन का चरमोत्कर्ष यीशु मसीह के द्वारा आता है (इब्रा. १:१, २ पर विचार करें)।

(२) भविष्यवक्ताओं के माध्यम से प्रकाशन की तुलना में यीशु के माध्यम से प्रकाशन अधिक बड़ा था।

(क) यह अधिक सीधा था कि एक भविष्यद्वक्ता कहे, "प्रभु इस प्रकार कहता है," परन्तु यीशु ने कहा, "मैं तुमसे कहता हूँ" (मत्ती १२:२२-२४, २८, और यूहन्ना ७:४६ पर विचार करें)।

(ख) यह व्यक्तिगत और सबसे ऊँचे अधिकार के साथ था। एक भविष्यद्वक्ता को कुछ बताया जाता था, परन्तु यीशु ने वही बोला जो उसे सिखाया गया था और जो उसने देखा था (यूहन्ना ८:२८, ३८)।

(ग) यह भरा हुआ था। एक भविष्यद्वक्ता कह सकता है कि वह मार्ग जानता है, परन्तु यीशु ने कहा कि वह स्वयं मार्ग है (यूहन्ना १४:६ पर विचार करें)।

टिप्पणियाँ -

ग) विशेष प्रकाशन नए नियम के प्रेरितों के माध्यम से प्रकट किया गया था।

(१) चूंकि सुसमाचार में यीशु का जन्म, मृत्यु, पुनरुत्थान, स्वर्गारोहण और उसका दूसरा आगमन सम्मिलित है, इसलिए बाद की घटनाओं का अर्थ बताने के लिए प्रेरितों की आवश्यकता थी।

(२) प्रेरितों का उपयोग ऐसी बातों को समझाने के लिए भी किया गया था जैसे पवित्र आत्मा का उण्डेला जाना, कलीसिया की स्थापना, और अन्यजातियों का मिलाया जाना (देखें इफि. ३:४-६)।

चर्चा विषय

विशेष प्रकाशन के विभिन्न माध्यमों के विषय में आगे की चर्चा को बढ़ावा देने के लिए पिछली अवधारणाओं का उपयोग करें।

३) विशेष प्रकाशन की विषयवस्तुएँ।

क) सबसे पहले, विषयवस्तु स्वयं परमेश्वर है। किसी भी चीज़ से अधिक, विशेष प्रकाशन परमेश्वर को प्रकट करता है (देखें उत्प. १७:१; ३५:७; और निर्ग. ३:६, १४)।

(१) इसका अर्थ यह नहीं है कि अब और कोई रहस्य नहीं है। विशेष प्रकाशन के साथ भी रहस्य बने रहते हैं (देखें निर्ग. ३३:२०)।

(२) यीशु में विशेष प्रकाशन के चरमोत्कर्ष के साथ भी, रहस्य अभी भी बने हुए हैं (देखें मत्ती १७:२, ६)।

(३) विषयवस्तु, विशेष रूप से यीशु मसीह है (गल १:१६; प्रेरितों के काम ९:३,५)।

टिप्पणियाँ -

ख) दूसरा, विशेष प्रकाशन की विषयवस्तु अलौकिक सत्य है।

(१) यह अर्थपूर्ण प्रकाशन है, रहस्यमय संचारण नहीं (देखें १ शमू. ३:२१ और यशा. २२:१४)।

(२) व्यवस्था परमेश्वर द्वारा अपनी अलौकिक धार्मिकता का प्रकटीकरण है। यह अलौकिक सत्य है।

(३) सुसमाचार अलौकिक सत्य के प्रकाशन का चरमोत्कर्ष है (गल. १:१२ और यूह. १४:६)।

ग) तीसरा, विशेष प्रकाशन की विषयवस्तु परमेश्वर के उच्चतम उद्देश्य की घोषणा है (देखें इफि. १:९, १०)।

चर्चा विषय

परमेश्वर का अंतिम उद्देश्य क्या है?

घ. अधीनस्थ प्रकाशन (कभी-कभी रोशनी कहा जाता है)।

१) अधीनस्थ प्रकाशन क्या है?

क) अधीनस्थ प्रकाशन केवल इस अर्थ में अतिरिक्त प्रकाशन है कि यह पहले से अस्तित्व में आए प्रकाशन को और समझा और स्पष्ट कर सकता है।

ख) यह प्रकाशन हमेशा पवित्रशास्त्र के विशेष प्रकाशन के अधीनस्थ और दूसरे स्थान पर होता है। अर्थात्, अधीनस्थ प्रकाशन को विशेष प्रकाशन के अनुरूप होना चाहिए। इसे उसको उत्तर देना होगा।

ग) अधीनस्थ प्रकाशन में बाईबल अध्ययन में समझ, भविष्यवाणी, बुद्धि की बातें आदि जैसी चीजें सम्मिलित हैं।

टिप्पणियाँ -

२) अधीनस्थ प्रकाशन किसके लिए है?

क) यह मसीही विश्वासियों को यीशु के विषय में अधिक स्पष्ट प्रकाशन देने के लिए है (इफि. १:१७)।

ख) यह मसीही समुदाय की उन्नति के लिए है (१ कुरिं. १४:२६)।

ग) यह भी ध्यान दें कि भविष्यवाणी अधीनस्थ प्रकाशन से कैसे संबंधित है (१ कुरिं. १२:१०)।

३) अधीनस्थ प्रकाशन की एक संतुलित समझ।

क) अधीनस्थ प्रकाशन "नए प्रकाशन" के अर्थ में अतिरिक्त प्रकाशन नहीं है।

ख) परमेश्वर के सत्य को उसके वचन में पूरी रीति से घोषित किया गया है।

ग) यह नया सत्य नहीं है। यह पहले ही प्रकट हो चुके की गहरी प्रशंसा और समझ है।

घ) साथ ही, हमें अधीनस्थ प्रकाशन के अस्तित्व और महत्व को स्वीकार करना चाहिए।

ङ) हमें अधीनस्थ प्रकाशन के अपने दृष्टिकोण में संतुलित होना चाहिए।

(१) हमें उस चरम में नहीं पड़ना चाहिए जो "नए" ज्ञान को प्राप्त करने के लिए अधीनस्थ प्रकाशन का उपयोग करता है, जो कि पवित्रशास्त्र से मेल नहीं खाता या उससे आगे निकलता है। पवित्रशास्त्र के विषय में एक "पर्याप्तता" है, हमें जो कुछ भी जानने की आवश्यकता है वह परमेश्वर के वचन में पाया जा सकता है।

(२) हमें उस चरम में नहीं पड़ना चाहिए जो "कैनन" (बाईबल) के बंद होने को परमेश्वर के मुंह के बंद होने के संकेत के रूप में समझता है। यह चरम कहता है कि परमेश्वर अब अपने लोगों के साथ बातचीत नहीं करता है या स्वयं को प्रकट नहीं करता है। पवित्रशास्त्र की "पर्याप्तता" के कारण परमेश्वर स्वयं को, अपने तरीके, और अपनी दिशा को विभिन्न माध्यमों से प्रकट करना बंद नहीं करता है (जिसकी विषयवस्तु पवित्रशास्त्र के अनुरूप है)।

टिप्पणियाँ -

चर्चा विषय

अधीनस्थ प्रकाशन के विषय में और चर्चा को बढ़ावा देने के लिए पिछली अवधारणाओं का उपयोग करें।

३. परमेश्वर को विश्वास के द्वारा जाना जाता है।

क. विश्वास वह यंत्र या गाड़ी है जिसके द्वारा परमेश्वर का ज्ञान आता है।

ख. परमेश्वर के ज्ञान में रहस्य है क्योंकि यह उसका ज्ञान है जिसे देखा नहीं जा सकता (इब्रा. ११:१ पर ध्यान दें)। फिर भी, जब प्रकाशन विश्वास के यंत्र से होकर गुजरता है, वह परमेश्वर के ज्ञान का एक सुंदर गीत पैदा करता है।

लेखक का दृष्टांत:

परमेश्वर को जानने की प्रक्रिया में विश्वास उसी प्रकार आवश्यक है जिस प्रकार उपहार को प्राप्त करने वाले की आवश्यकता होती है इससे पहले कि वह वास्तव में एक उपहार बने।

विश्वास एक टेलीविजन के एंटीना के समान है। शो को वायुमार्ग पर प्रसारित किया जा सकता है, परन्तु यदि आपका एंटीना काम नहीं करता है, तो आपके टेलीविजन में कार्यक्रम नहीं आएगा। परमेश्वर को जानने का भी यही तरीका है।

अपना उदाहरण लिखें

टिप्पणियाँ -

ग. विश्वास सामान्य प्रकाशन के प्रति मनुष्य की प्रतिक्रिया को लेकर रोमि. १ में जो हम देखते हैं, उसके ठीक विपरीत प्रतिक्रिया है।

१) विश्वास सत्य को दबाने की बजाय सत्य की पहचान करता है।

२) परमेश्वर के प्रति अनादर और कृतघ्नता दिखाने के बजाय, विश्वास उसकी महिमा करता है और परमेश्वर को उसके स्वयं को प्रकट करने के लिए धन्यवाद देता है।

३) झूठ के लिए सच्चाई का आदान-प्रदान करने के बजाय, विश्वास पुष्टि करता है और परमेश्वर के स्वयं प्रकटीकरण के प्रति प्रतिक्रिया करता है।

चर्चा विषय

इब्रा. ११:६ का अध्ययन करें और विश्वास के माध्यम से परमेश्वर को जानने की व्याख्या करने के लिए निम्नलिखित आरेख का उपयोग करें।

विश्वास	=	**प्रतीति करो कि वह है**
|		|
परमेश्वर को प्रसन्न करो	=	**वह जो परमेश्वर के पास आता है = वे जो उसे खोजते हैं**

ध्यान दें: विश्वास और परमेश्वर के साथ संबंध (परमेश्वर को जानना) सीधे जुड़े हुए हैं। विश्वास प्रक्रिया का प्राप्त करने वाला भाग आरम्भ करता है। विश्वास परमेश्वर को प्रसन्न करता है क्योंकि विश्वास का परिणाम परमेश्वर को जानना होता है, और परमेश्वर को जानना वही है जो परमेश्वर हमारे लिए और हमसे किसी भी चीज से अधिक चाहता है।

टिप्पणियाँ -

III. परमेश्वर को जानने के चार पहलू।

क. परिचय: यह खंड परमेश्वर को जानने के चार पहलुओं का परिचय देता है: जागरूकता, गुण, रवैया और कार्य।

१. परमेश्वर को जानने की वास्तविकता।

क. यह सच है और यह कहा जाना चाहिए, परमेश्वर **समझ से बाहर** है।

१) परमेश्वर इस अर्थ में समझ से बाहर है कि हमेशा ऐसी चीजें होंगी जिन्हें सीमित मनुष्य असीम परमेश्वर के विषय में जानने या समझने में सक्षम नहीं होगा (समीक्षा १ राजा ८:१२; यशा. ५५:८; रोमि. ११:३३)।

२) वह इस अर्थ में समझ से बाहर है कि वह परमेश्वर है और उसे साधारण रूप में उसी प्रकार से नहीं जाना जा सकता जैसे हम एक दूसरे को जानते हैं।

३) वह इस अर्थ में समझ से बाहर है कि जिसका ज्ञान ही असीम है वह स्वयं तो अवश्य ही असीम होगा। अर्थात्, हम कभी भी परमेश्वर को जानने के अंत तक नहीं पहुँच सकते।

क) धर्मविज्ञान के एक डॉक्टर ने एक बार इस सत्य का वर्णन इस प्रकार किया: "परमेश्वर को जानने की प्रक्रिया शिक्षा की प्रक्रिया के समान है। मैंने अपनी डॉक्टरेट की पढ़ाई पूरी कर ली है और सबसे बड़ी बात जो मैंने सीखी है वह यह है कि जितना अधिक मैं जानता हूँ, उतना ही अधिक मैं जानता हूँ कि मैं नहीं जानता। परमेश्वर को जानने के साथ भी ऐसा ही है। जितना अधिक मैं परमेश्वर को जानता हूँ, उतना ही अधिक मुझे यह पता चलता है कि मैं उसके विषय में कितना नहीं जानता।"

ख) यह इस अर्थ में निश्चित रूप से सच है कि हम परमेश्वर के जितने करीब आते हैं, वह उतना ही बड़ा होता जाता है। चूँकि उसके बड़े होने का कोई अंत नहीं है, वह वास्तव में समझ से बाहर है!

ख. साथ ही यह अवश्य कहा जाना चाहिए, **यद्यपि हम वह सब कुछ नहीं जान सकते जो परमेश्वर जानता है, हम उसे जान सकते हैं।**

टिप्पणियाँ -

ग. हमारा परमेश्वर जो समझ से बाहर है और एक ईश्वर जो अवैयक्तिक है, के बीच एक बड़ा अंतर है।

१) हमारा परमेश्वर समझ से बाहर है। हालाँकि, वह अवैयक्तिक नहीं है।

२) वह एक व्यक्तिगत परमेश्वर है। वह अपने प्राणियों के साथ संबंध रखना चाहता है। इस प्रकार हम परमेश्वर को जान सकते हैं। वास्तव में, हमें परमेश्वर को जानना चाहिए (समीक्षा यिर्म. ९:२३,२४; होशे ६:६; इब्रा. ११:६; यूह. १७:३)।

३) परमेश्वर को जानने से बड़ा कोई लक्ष्य नहीं है (फिलि. ३:१०)।

चर्चा विषय

जीवन में सभी के लक्ष्य होते हैं। कुछ अच्छे लक्ष्य हैं। कुछ बुरे लक्ष्य हैं। आपके क्या लक्ष्य है? आपका सर्वोच्च लक्ष्य क्या है जिस पर अन्य सभी लक्ष्य निर्भर करते हैं? क्या वह परमेश्वर को जानना है?

२. परमेश्वर को जानने के आरम्भ की समीक्षा।

क. परमेश्वर **को जानना** परमेश्वर **के विषय में जानने** से बहुत अलग है।

१) अंतर बचाए हुए होने और खोए हुए होने के बीच का अंतर है। यह मसीहियत और धर्म (परमेश्वर के साथ आंतरिक संबंध के बिना, बाहरी धार्मिक काम) के बीच का अंतर है।

२) मसीही केवल धर्म में सम्मिलित नहीं हैं। हम सम्बन्ध में सम्मिलित हैं।

ख. उद्धार में (अर्थात यीशु में), हमारे सामने परमेश्वर का ज्ञान प्रकट होता है (मत्ती ११:२७; १ यूह. ५:२०)। उद्धार (अनन्त जीवन) परमेश्वर को उसके पुत्र यीशु के द्वारा जानना है।

ग. परमेश्वर को जानने का **एकमात्र** तरीका यीशु को जानना है (यूह. १४:६; ८:१९; २ कुरिं. ४:६; और १ यूह. ५:२०)।

टिप्पणियाँ -

लेखक की टिप्पणी:

आधुनिक प्रवृत्ति मानवतावादी सहनशीलता और दुनिया भर में "भाईचारे" के ईश्वर-सदृश की ओर है। हालाँकि, आधुनिक कलीसिया को सच्चाई की समझ की ओर लौटना चाहिए। कलीसिया को मानवतावाद के झूठे प्रेम को प्रदर्शित करने के सांसारिक प्रलोभन से पहले ही कमजोर नहीं पड़ जाना चाहिए (दर्शनशास्त्र जो कहता है - मैं ठीक हूँ, तुम ठीक हो)। जब लोग नर्क में जा रहे हैं तो हम अपना सिर नहीं मोड़ सकते। हम यह नहीं कह सकते कि "तुम ठीक हो" जबकि व्यक्ति नरक में जा रहा हो।

हमें सच्चाई के आशय को दृढ़ता से पकड़ना चाहिए कि **यीशु ही एकमात्र रास्ता** है। हमें इसे जरूरतमंद दुनिया को साहसपूर्वक घोषित करना चाहिए, भले ही ऐसा कुछ कहना प्रचलित दर्शनशास्त्र के विरुद्ध हो।

चर्चा विषय

परमेश्वर **को जानने** बनाम परमेश्वर **के विषय में जानने** की चर्चा को बढ़ावा देने के लिए पिछली अवधारणाओं का उपयोग करें। इसके अलावा, चर्चा करें कि क्या कोई व्यक्ति यीशु को अपना समर्पण किए बिना या यहाँ तक कि अभी तक यीशु के विषय में बिना सुने ही परमेश्वर को जान सकता है?

३. परमेश्वर को जानने का मार्ग (या पथ)।

क. परमेश्वर को जानने का मार्ग (या पथ) क्रूस पर आरम्भ होता है और यीशु में जारी रहता है।

ख. पवित्र आत्मा हमें परमेश्वर को जानने के मार्ग (पथ) पर ले जाता है। वह प्रेरक है और वही है जो हमें परमेश्वर के साथ बढ़ते हुए संबंध को बनाने में सक्षम बनाता है।

चर्चा विषय

१ कुरिं. २:११ और इफि. १:१७ पर ध्यान दें और परमेश्वर के साथ हमारे संबंधों में बढ़ने में हमारी सहायता करने को लेकर पवित्र आत्मा की भूमिका पर चर्चा करें।

टिप्पणियाँ -

ग. एक बार जब हम इस तथ्य को स्वीकार कर लेते हैं कि परमेश्वर को जाना जा सकता है, तो हमें परमेश्वर के विषय में अपने ज्ञान को बढ़ाने के तरीके को लेकर एक व्यवस्थित धर्मविज्ञान विकसित करना आरम्भ कर देना चाहिए। अर्थात, उसके साथ संबंध कैसे बनाएँ। परमेश्वर को जानने के चार पहलुओं का अध्ययन करने का यही लक्ष्य है: जागरूकता, गुण, कार्य और रवैया।

चर्चा विषय

इस पाठ्यक्रम के बाकी भागों में निम्नलिखित आरेख को संदर्भित किया जाना चाहिए। यह इस खंड की सामग्री की रूपरेखा के साथ-साथ अवधारणाओं के विचार के प्रवाह दोनों को दर्शाता है। यह इस विधिवत धर्मविज्ञान में उपयोग की गई "प्रणाली" को दर्शाता है। "आओ, हम ज्ञान ढूँढें, वरन् यहोवा का ज्ञान प्राप्त करने के लिये यत्न भी करें (होशे ६:३)।"

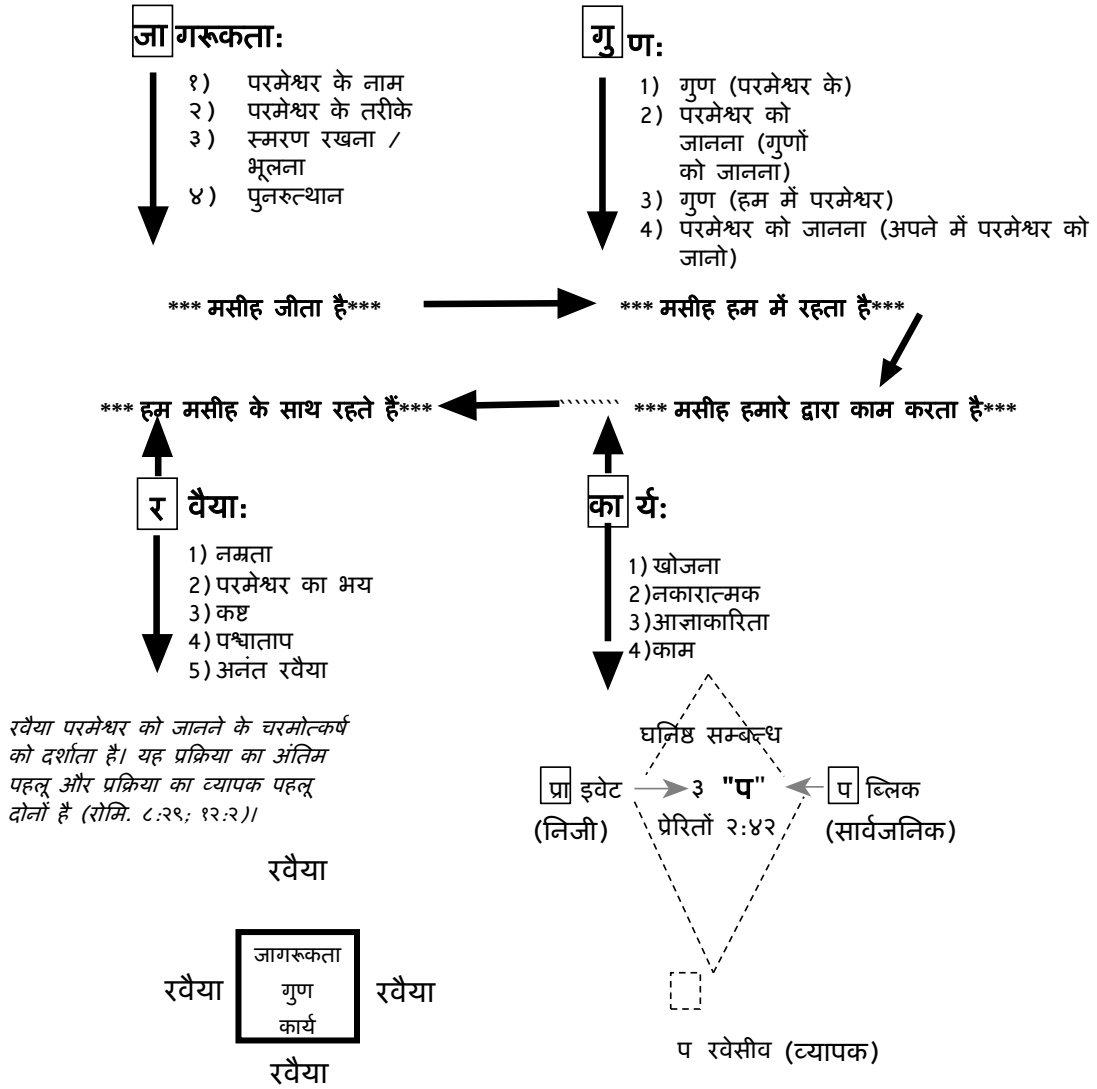

टिप्पणियाँ -

ख. जागरूकता।

१. परमेश्वर के नाम।

क. हम परमेश्वर के उन पहलुओं से अवगत होने के लिए चिंतित हैं जो हमें उसे बेहतर तरीके से जानने में सक्षम करेंगे। परमेश्वर के नामों के विषय में जागरूकता हमें उसे बेहतर तरीके से जानने में सक्षम करेगी क्योंकि उसके नाम बताते हैं कि वह कौन है। परमेश्वर के नाम बहुत महत्वपूर्ण हैं।

१) निर्ग. २०:७ में, यह परमेश्वर का **नाम** है जिसके विषय में हमें चेतावनी दी गई है।

२) मत्ती ६:९ में, हमें प्रार्थना करने का निर्देश दिया गया है, तेरा **नाम** पवित्र माना जाए।

३) भज. ६९:३६ में, हमें उसके **नाम** से प्रेम करने के लिए कहा गया है।

४) २ थिस्स. १:१२ में, हमें उसके **नाम** की महिमा करने के लिए कहा गया है।

५) भज. १८:४९ में, हमें उसके **नाम** की स्तुति करने के लिए कहा गया है।

६) प्रेरितों के काम २:२१ में, हमें उसके **नाम** से कार्य करने के लिए कहा गया है।

७) इब्रा. १३:१५ में, हमें उसके **नाम** का धन्यवाद करने के लिए कहा गया है।

८) १ यूहन्ना ३:२३ में, हमें उसके **नाम** पर विश्वास करने के लिए कहा गया है।

ख. हमें परमेश्वर के नामों के विषय में एक अनुभवात्मक जागरूकता की आवश्यकता है।

१) स्मरण रखें, इब्रानी संस्कृति में नाम बहुत महत्वपूर्ण था। यह व्यक्ति के अस्तित्व का प्रतिनिधित्व करता था। यह उस व्यक्ति के चरित्र का प्रतिनिधित्व करता था।

२) परमेश्वर अपने नामों का उपयोग स्वयं को हम पर प्रकट करने के एक तरीके के रूप में करता है। यह नाम का अर्थ है जो उसके विषय में हमारे ज्ञान को बढ़ाता है। इसके अलावा, यह हमारे अपने जीवन में अनुभव हो रहा है कि हमें परमेश्वर की आवश्यकता होती है, इसके संबंध में कि परमेश्वर का एक विशेष नाम क्या दर्शाता है।

टिप्पणियाँ -

३) इस प्रकार, जब हम कहते हैं "एल शद्दाई " हम अब्राहम को स्मरण करते हैं (उत्पत्ति १७:१), जो एक पुत्र पैदा करने के लिए बहुत बूढ़ा था। हम एहसास करते हैं कि मनुष्य की निर्बलता में परमेश्वर की सामर्थ सिद्ध होती है।

क) जब हम अपने जीवन में उस सामर्थ से अवगत हो जाते हैं, तब हम परमेश्वर के करीब बढ़ने लगते हैं। जैसे-जैसे हम परमेश्वर के नामों के विषय में (केवल जागरूक होने के विपरीत) जागरूक होते जाते हैं, हम अनिवार्य रूप से उसे और अच्छे से जान पाएँगे।

ख) हम मत्ती १८:२० में देखते हैं कि जहाँ हम में से दो या तीन उसके नाम से इकट्ठे होते हैं, वह वहाँ हमसे संबंधित होता है।

चर्चा विषय

किसी व्यक्ति के चरित्र को उसके नाम से संबद्ध या पहचाने जाने की बाईबल अवधारणा पर चर्चा करें।

लेखक का सुझाव:

बाईबल में यीशु के विभिन्न नामों को खोजने के लिए एक सामयिक सूचकांक या अन्य विश्वकोश संदर्भ उपकरण का उपयोग करें। कम से कम ५२ अलग-अलग नाम हैं (उदाहरण के लिए, **शांति का राजकुमार** और **अच्छा चरवाहा**)।

एक वर्ष तक प्रत्येक सप्ताह एक नाम स्मरण करें। सप्ताह के दौरान अपनी प्रार्थना के समय उस नाम के महत्व पर ध्यान देने के लिए समय निकालें।

अपनी प्रार्थनाओं के अंत में, यीशु के उस विशेष नाम का प्रयोग करें।

उदाहरण के लिए, यदि आप अपने जीवन में परमेश्वर की शांति के लिए प्रार्थना कर रहे हैं, तो **शांति के परमेश्वर के नाम से** प्रार्थना समाप्त करें। जब आपकी प्रार्थना का उत्तर दिया जाएगा तो आप उस विशेष क्षेत्र में अधिक विशेष रूप से परमेश्वर का अनुभव करना (और इसलिए जानना) आरम्भ कर देंगे।

टिप्पणियाँ -

अपने उदाहरण डालें:

चर्चा विषय

परमेश्वर के "यहोवा" नामों का अध्ययन करने के लिए निम्नलिखित आरेख का प्रयोग करें। आपने जो पढ़ा है उसे अपने जीवन में लागू करें। उदाहरण के लिए, परमेश्वर को अपना प्रदाता "यहोवा यीरे" बनने दें। जैसे-जैसे आप अनुभव से परमेश्वर के नामों के विषय में जानते हैं, वैसे-वैसे आपका उसके साथ संबंध बढ़ता जाएगा।

परमेश्वर का नाम	अर्थ	पद्य	विवरण
यहोवा-यीरे	यहोवा देखता है; प्रबन्धक	उत्प. २२:१४	पिता
यहोवा-रोफा	यहोवा चंगा करता है	निर्ग. १५:२६; यशा.	वैध
यहोवा-निस्सी	यहोवा मेरा झण्डा	६१:१	योद्धा
यहोवा-म'कद्देश	यहोवा जो पवित्र करता है	निर्ग. १७:१५; भज.	शुद्ध करनेवाला
यहोवा-शालोम	यहोवा शान्ति है	२०:५	तसल्ली देनेवाला
यहोवा-त्सिदकेनु	यहोवा हमारी धार्मिकता	लैव्य. २०:७,८	वक़ील
यहोवा-रोही	यहोवा मेरा चरवाहा	न्या. ६:२४; यशा.	पासबान
यहोवा-शाम्मा	यहोवा वहाँ है	९:६	परछाई

चर्चा विषय

क्या आप कह सकते हैं कि आप परमेश्वर को अपने पिता? अपने वैध? अपने योद्धा? अपने पवित्र करने वाले? अपने तसल्ली देने वाले? अपने वकील? अपने पासबान? अपनी परछाई के रूप में जानते हैं?

टिप्पणियाँ -

२. परमेश्वर के तरीके।

क. परमेश्वर को जानने के लिए हमें उसके तरीकों से अवगत होना चाहिए।

चर्चा विषय

परमेश्वर के तरीकों के विषय में परिचयात्मक चर्चा प्रदान करने के लिए निर्ग. ३३:१३, भज. २५:४ और यशा. ५८:२ का उपयोग करें।

ख. जिस प्रकार हम किसी को बेहतर तरीके से जानने लगते हैं जब हम उस व्यक्ति के "तरीकों" को जानना आरम्भ कर देते हैं, वैसे ही हम परमेश्वर को बेहतर तरीके से जान पाएँगे जब हम उसके तरीकों से अवगत हो जाएँगे।

१) परमेश्वर के कार्य करने के कुछ तरीके हैं। हम कुछ ऐसा कह सकते हैं, "यह परमेश्वर की तरह नहीं लगता।" इस प्रकार का कथन परमेश्वर के तरीकों का मूल्यांकन है।

२) हम किसी के "तरीकों" को कैसे जान पाते हैं? हम उन लोगों के "तरीकों" से सबसे अधिक अवगत होते हैं जिनके साथ हम सबसे अधिक समय बिताते हैं।

लेखक का दृष्टांत:

उदाहरण के लिए, मैं अपनी पत्नी के तौर-तरीकों से अच्छी रीति से वाकिफ हूँ। मैं उसकी आदतों, रिवाजों और काम करने की शैली को जानता हूँ। वह बहुत शाँत है और अपना आपा नहीं खोती है। यदि किसी ने मुझसे कहा कि उन्होंने उसे सड़क पर किसी पर गुस्से में चिल्लाते हुए देखा है, तो मुझे इस पर विश्वास करना कठिन होगा। क्यों? क्योंकि यह उसके जैसा नहीं है। यह उसका तरीका नहीं है।

परमेश्वर के साथ भी ऐसा ही है। जितना अधिक समय हम उसके साथ बिताएंगे, उतना ही अधिक हम उसके तरीकों को जानेंगे। जैसे-जैसे हम उसके तौर-तरीकों को जानेंगे, हम उसके साथ रिश्ते में बढ़ते जाएंगे।

टिप्पणियाँ -

अपने उदाहरण डालें:

चर्चा विषय

परमेश्वर के तरीकों के विषय में जागरूक होने के महत्व पर चर्चा करने के लिए का प्रयोग करें। भज. ९५:१०

३. स्मरण रखने और भूलने के द्वारा परमेश्वर की जागरूकता।

क. स्मरण रखना और भूलना एक दूसरे के विपरीत हैं।

टिप्पणियाँ -

ख. परमेश्वर को जानने के लिए दोनों आवश्यक हैं।

१) परमेश्वर के प्रति जागरूक होने के लिए परमेश्वर और उसके पिछले कार्यों को स्मरण करने की आवश्यकता है। जानना ऐतिहासिक है। जब हम परमेश्वर और उसके कार्यों को स्मरण करते हैं, हम उसे जानने के करीब आते हैं। यदि हम परमेश्वर और उनके कार्यों को स्मरण नहीं करते हैं, हम पाप में पड़ जाएंगे।

क) इस्राएलियों के साथ यही हुआ था। उन्हें स्मरण नहीं था कि कैसे परमेश्वर ने उन्हें चमत्कारिक ढंग से मिस्र से छुड़ाया था। वे परमेश्वर के विरुद्ध कुड़कुड़ाने लगे क्योंकि उन्हें उसके प्रावधान का तरीका स्मरण नहीं था। इसलिए, लाल समुद्र के दो भाग होने के केवल चार महीने बाद, उन्होंने सोने के बछड़े की मूर्तिपूजा का बड़ा काम किया।

ख) हम बिलकुल इस्राएलियों के समान हैं। इसका समाधान यह है कि आप लगातार अपने आप को परमेश्वर और उसके पिछले कार्यों का स्मरण दिलाते रहें। स्मरण रखने के संदर्भ में जागरूकता पैदा करें।

२) परमेश्वर के प्रति जागरूक होने के लिए कुछ बातों को भूलने की आवश्यकता होती है। परमेश्वर को बेहतर तरीके से जानने के लिए हमें स्वयं को भूल जाना चाहिए। हमें परमेश्वर को अपना जीवन देने में जो "खोया" है उसे भूल जाना चाहिए। हमें इस संबंध में पौलुस की जागरूकता का अभ्यास करना चाहिए, जो मसीह को प्राप्त करने के लिए स्वयं को और अपने अतीत को भूलने के लिए तैयार था।

चर्चा विषय

फिलि. ३:८-१० और इसके संदर्भ का अध्ययन करें। परमेश्वर को जानने के लिए अपने आप को और अपने अतीत को भूलने के विचार पर चर्चा करें।

अपना उदाहरण डालें:

टिप्पणियाँ -

४. पुनरुत्थान के प्रति जागरूकता।

क. फिलि. ३:१० में हम देखते हैं कि पौलुस एक बहुत ही विशिष्ट जागरूकता चाहता था। अर्थात्, उसके पुनरुत्थान की सामर्थ के विषय में जागरूकता।

ख. इसका कारण कि मसीहियत जो है और वह है और अन्य धर्म जो हैं वो हैं कि मसीहियत में एक **जीवित परमेश्वर** है (जिसका पुनरुत्थान हुआ था) और अन्य धर्मों में मृत देवता हैं।

१) पुनरुत्थान के प्रति जागरूक होने का अर्थ यह जानना है कि **वह जीवित है**। परमेश्वर को जानने हेतु आपको यह कहने में सक्षम होना चाहिए कि यीशु आपके अपने जीवन में जीवित है। आप एक बेजान ईश्वर के साथ संबंध नहीं रख सकते हैं। आप किसी ऐसे को जान नहीं सकते जो जीवित नहीं है।

२) जब पहले चेलों को पुनरुत्थान के विषय में पता चला तो वे मौलिक रूप से बदल गए। वे "शिष्यों" के संदेह करने वाले पराजित, उदास और भ्रमित समूह से विजयी, हर्षित, और विश्वास करने वाले शिष्यों के सेवा कार्य उन्मुख समूह में चले गए। कैसे? पुनरुत्थान के प्रति उनकी जागरूकता के कारण।

३) यही बात हमारे साथ भी होती है जब हम पुनरुत्थान के प्रति अपनी जागरूकता बढ़ाते हैं। हम परमेश्वर के साथ अपने सम्बन्ध में बढ़ते हैं।

चर्चा विषय

परमेश्वर को जानने के लिए, हमें परमेश्वर के नाम, परमेश्वर के तरीके, स्मरण रखने/भूलने और पुनरुत्थान के विषय में जागरूकता की आवश्यकता है।

इन क्षेत्रों से संबंधित किसी भी प्रश्न पर चर्चा करें।

ग. गुण।

१. परमेश्वर के व्यक्तित्व के वे पहलू जो परिभाषित करते हैं कि वह कौन है,उन्हें उसके गुणों के रूप में संदर्भित किया जा सकता है। पूरी बाईबल में, हम देखते हैं कि ये गुण परमेश्वर को जानने से जुड़े हुए हैं।

क. हम उसके गुणों को जानने के द्वारा परमेश्वर को जान सकते हैं (होशे २:२० और यिर्म. ९:२४ देखें)।

ख. जब हम परमेश्वर को उसके गुणों को जानकर जान लेते हैं तो उसके गुण हमारे भीतर रहने लगते हैं। इसका परिणाम परमेश्वर के विषय में और अधिक जानना होता है (देखें यिर्म. २२:१६ और १ यूह. ४:७)।

टिप्पणियाँ -

२. परमेश्वर को उसके गुणों के माध्यम से जानने की प्रक्रिया।

क. प्रक्रिया कहाँ से आरम्भ होती है? क्या मनुष्य परमेश्वर के गुणों को जीने के प्रयास से उसको जान सकता है?

१) स्पष्ट रूप से उत्तर है **नहीं!** (यशा. १९:२१ पर विचार करें)।

२) परमेश्वर को हमारे द्वारा उसे जानने के लिए कार्य करना चाहिए। प्रक्रिया परमेश्वर से आरम्भ होती है। यह इसलिए है क्योंकि वह सबसे पहले अपने गुणों को हम पर प्रकाशित करता है जिससे हम अपने स्वयं के जीवन में उसके गुणों को अनुभव के रूप में जान पाते हैं।

३) १ यूह. ४:१९ में, हम देखते हैं कि हम केवल इसलिए प्रेम करने में सक्षम हैं क्योंकि पहले उसने हमसे प्रेम किया। तो फिर, हमारा प्रेम कैसे बढ़ सकता है?

क) १ यूहन्ना ४:१९ के सिद्धांत के अनुसार, हमारा प्रेम तभी बढ़ सकता है जब हमारे लिए परमेश्वर का प्रेम बढ़े।

ख) क्या हमारे लिए परमेश्वर का प्रेम बढ़ सकता है? **नहीं!** फिर क्या बढ़ना चाहिए?

ग) यहाँ हम परमेश्वर को जानने में प्रकाशन के महत्व को देखते हैं। हमारे लिए परमेश्वर का प्रेम बढ़ नहीं सकता, परन्तु उस प्रेम के विषय में हमारी धारणा (या प्रकाशन) बढ़ सकती है। यदि हमारे लिए परमेश्वर के प्रेम के विषय में हमारा प्रकाशन बढ़ता है, तो परमेश्वर और दूसरों के लिए हमारा प्रेम बढ़ सकता है।

प्रेरित पौलुस की समझ:

पौलुस ने सिद्धांतों को समझा कि हमारा प्रेम बढ़ता है क्योंकि हमारे लिए परमेश्वर के प्रेम की हमारी धारणा या प्रकाशन बढ़ता है। इस प्रकार, उसने प्रार्थना की कि इफिसुस वासी मसीह के प्रेम को समझने और जानने में सक्षम हों (इफि. ३:१८, १९)।

हमें इस प्रार्थना को परमेश्वर को जानने के मार्ग (या पथ) पर अपने जीवन में लागू करना चाहिए।

टिप्पणियाँ -

ख. प्रक्रिया के उदाहरण।

१) आइए हम १ यूह. ४ और **प्रेम** के गुण का उपयोग उदाहरण दिखाने के लिए करें कि कैसे परमेश्वर को उसके गुणों के माध्यम से जानने की प्रक्रिया काम करती है।

क) प्रक्रिया परमेश्वर के गुण के अस्तित्व में आरम्भ होती है। "परमेश्वर **प्रेम** है" (१ यूहन्ना ४:८)।

ख) हम परमेश्वर को उसके गुणों को जानकर जान सकते हैं। "और हम उस **प्रेम** को जान गए हैं जो परमेश्वर का हम से है" (१ यूह. ४:१६; और इफि. ३:१९)।

ग) जब हम परमेश्वर के गुण को जान लेते हैं, तब हम उस गुण को अपने भीतर अनुभव कर सकते हैं। हम **प्रेम** कर सकते हैं (१ यूह. ४:१९)।

घ) जब हम अपने भीतर परमेश्वर के गुण का अनुभव करते हैं, तब हम परमेश्वर को और अधिक पूर्ण रूप से जान सकते हैं। "जो कोई **प्रेम** करता है वह परमेश्वर को जानता है" (१ यूहन्ना ४:७)।

२) अब हम प्रक्रिया के प्रवाह को दिखाने के लिए १ यूह. ४ (पद्य १६) से एक विशिष्ट पद्य का उपयोग करते हैं।

क) गुण: "**परमेश्वर प्रेम है**।"

ख) हम इस गुण को जानकर परमेश्वर को जानते हैं: "**हमने प्रेम को जान लिया है**।"

ग) हम अपने अंदर काम कर रहे गुण का अनुभव करते हैं: "**वह जो प्रेम में हमारे भीतर रहता है**।"

घ) हम परमेश्वर और अधिक रीति से जानते हैं: "**परमेश्वर उसमें रहता है**।" प्रक्रिया का परिणाम यह है कि परमेश्वर हमारे करीब है।

Discussion Point

उन तरीकों पर चर्चा करें जिनसे आप पिछली प्रक्रिया को अपने जीवन में लागू कर सकते हैं। उन तरीकों पर चर्चा करें जो परमेश्वर को जानने के जागरूकता स्तर से परमेश्वर को जानने के गुण स्तर की ओर ले जाते हैं।

३. जब परमेश्वर हमारे स्थान पर कार्य करता है, वह अपने गुणों को व्यक्त कर रहा होता है। यह अभिव्यक्ति सीधे तौर पर परमेश्वर को जानने से जुड़ी है।

टिप्पणियाँ -

चर्चा विषय

निम्नलिखित उदाहरणों पर विचार करें और चर्चा करें कि कैसे परमेश्वर की स्वयं की अभिव्यक्ति मनुष्य के उसे जानने से जुड़ी है।

उसे जिलाने वाले के रूप में जानना: होशे ६:१-३।

उसे प्रदाता के रूप में जानना: निर्गमन १६:१२ (व्य. २९:५ भी देखें)।

उसे छुड़ाने वाले के रूप में जानना: १ राजा २०:१३ (देखें यहे. १३:२१)।

घ. कार्य।

१. हमारे कार्यों के माध्यम से परमेश्वर को जानने का परिचय।

क. यह कहना निश्चित रूप से बाईबल आधारित है कि हम अपने कार्यों से परमेश्वर को जान सकते हैं। हमने परमेश्वर को उसके गुणों के माध्यम से जानने की अवधारणा को अपने अध्ययन में पेश किया है।

ख. आइए अब हम अपने कार्यों के माध्यम से परमेश्वर को जानने पर ध्यान दें।

२. परमेश्वर को खोजना।

क. बाईबल के कई पद्य हमें परमेश्वर को जानने हेतु उसको खोजने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

ख. ये पद्य हमारे पिछले निष्कर्ष के साथ असंगत नहीं हैं कि परमेश्वर को जानने की प्रक्रिया में परमेश्वर प्रारंभिक बिंदु है (देखें यिर्म. २४:७)।

ग. यहाँ तक कि परमेश्वर को खोजने की इच्छा और क्षमता भी परमेश्वर से ही आती है। हम कह सकते हैं, **हम परमेश्वर को खोजते हैं क्योंकि उसने पहले हमें खोजा** (और हमें उसे खोजने की इच्छा दी)।

चर्चा विषय

विभिन्न विद्यार्थियों से निम्नलिखित पद्यों को पढ़ने को कहें। प्रत्येक पद्य को पढ़ने के बाद रुकें और हमें अपने कर्मों से परमेश्वर को जानने के अवसर पर चर्चा करें:
नीति. २:४, ५; लूका ११:१०; इब्रा. ११:६; यशा. ५८:२; प्रेरितों १७:२६, २७; आमोस ५:४; नीति. ८:१७; १ इति. २८:९; मत्ती ७:७; और याकूब ४:८।

टिप्पणियाँ -

३. नकारात्मक कार्य।

क. हमारे कुछ कार्य परमेश्वर के साथ हमारे संबंध में बाधा डाल सकते हैं।

ख. इन कार्यों को न करना उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि उन कार्यों को करना जो हमें परमेश्वर की ओर ले जाते हैं।

१) पाप।

क) पाप की दुखद वास्तविकता यह है कि यह हमें परमेश्वर से अलग करता है (रोमि. ६:२३)।

ख) यह हमारे हृदय को परमेश्वर के प्रति अन्धकारमय या कठोर करने के द्वारा करता है (रोमि. १:२१; इफि. ४:१७, १८; इब्रा. ३:१३)।

२) मूर्तिपूजा।

क) मूर्तियाँ परमेश्वर को हमसे छिपाती हैं। वे झूठी विकल्प बन जाती हैं और हमें परमेश्वर से दूर ले जाती हैं।

ख) परमेश्वर जलन रखने वाला परमेश्वर है। वह किस बात की जलन रखता है? वह इस बात की जलन रखता है कि उसके लोग उसे और केवल उसे ही जानें (देखें यहे. ३९:२५)।

लेखक की टिप्पणी:

स्मरण रखें, मूर्तियाँ कई अलग-अलग रूपों में आती हैं। एक मूर्तिपूजक संस्कृति में वे पेड़ों या पत्थरों का रूप ले सकती हैं। एक धार्मिक संस्कृति में वे गहने, पेंटिंग या मूर्तियों का रूप ले सकती हैं। सुखवादी संस्कृति में वे ड्रग्स, शराब, यौन या पैसे का रूप ले सकती हैं। एक मसीही के जीवन में वे एक आदतन पाप, या यहाँ तक कि परमेश्वर से एक दर्शन, या स्वयं सेवकाई का रूप ले सकती हैं। जो कुछ भी परमेश्वर से पहले, या परमेश्वर के बजाय रखा जाता है, वह एक मूर्ति हो सकती है और हमें परमेश्वर से अलग कर सकती है।

अपना उदाहरण डालें:

टिप्पणियाँ -

३) उपेक्षा।

क) कार्य की कमी संभवत सबसे नकारात्मक कार्य है। कई मनोवैज्ञानिक कहते हैं कि उदासीनता या परवाह न करना (घृणा के बजाय) प्रेम के विपरीत है।

ख) परमेश्वर की उपेक्षा करना उसके साथ संबंध को नष्ट करने का सबसे तेज़ तरीका है।

ग) इसके बजाय, हमें स्वयं को परमेश्वर की उपस्थिति की स्मरण दिलानी चाहिए। भाई लॉरेंस ने इस प्रकार की आदत के विकास को "परमेश्वर की उपस्थिति का अभ्यास" कहा है। हमें इसका एहसास होना चाहिए कि किसी ऐसे व्यक्ति की उपेक्षा करना भद्दा और अपमानजनक है जो "हमेशा हमारे साथ है (मत्ती २८:२०)।"

टिप्पणियाँ -

लेखक का दृष्टांत:

पत्नियाँ इससे घृणा करती हैं जब उनके पति टेलीविजन पर फुटबॉल के खेल में इतने लीन हो जाते हैं कि वे कमरे में उनकी उपस्थिति को भी नहीं मानते हैं या यह नहीं जानते कि वे उनसे बात कर रही हैं। उपेक्षा वैवाहिक संबंधों को नष्ट कर देती है।

कई बार, पतियों को स्वयं पर शर्म आनी चाहिए।

परमेश्वर इससे कितना अधिक घृणा करता होगा जब हम सामान्य रूप से उसकी उपेक्षा करते हैं? हम अक्सर मार्था के समान होते हैं (लूका १०:३८-४२)। हम परमेश्वर के लिए जो कुछ कर रहे हैं उसमें हम इतने व्यस्त हो जाते हैं कि हम भूल ही जाते हैं कि वह हमारे ठीक साथ में है जो ध्यान आकर्षित करने का प्रयास कर रहा है। उपेक्षा पवित्र आत्मा को दुखी करता है।

हमें स्वयं पर कितना अधिक शर्मिंदा होना चाहिए?

अपना उदाहरण डालें:

टिप्पणियाँ -

4. आज्ञाकारिता।

क. सामान्य तौर पर, हम उन कार्यों का उल्लेख आज्ञाकारिता के कार्यों के रूप में कर सकते हैं जो हमें परमेश्वर को जानने की ओर ले जाते हैं।

१) एक अर्थ में, आज्ञाकारिता परमेश्वर के ज्ञान का आधार है। ध्यान दें कि यह पहले शिष्यों के मामले में कैसे सच था (लूका ५:११)।

२) आज्ञाकारिता का सीधा सम्बन्ध परमेश्वर को जानने से है। (१ यूह. २:३, मर. ३:३५, और लूका १०:२७, २८ में सम्बन्ध के प्रकारों पर विचार करें)।

क) नीतिवचन २:१, ५ में परमेश्वर को जानने की शर्त आज्ञाकारिता है।

ख) यहाँ तक कि फिरौन ने भी समझ लिया था कि आज्ञाकारिता और परमेश्वर को जानने के बीच एक सीधा संबंध है (देखें निर्ग. ५:२)।

ख. सम्बन्ध के विचार के लिए मित्रता और प्रेम दो मजबूत विवरण हैं। ध्यान दें कि ये दोनों विवरण यूह.१५:१४ और १४:१५ में आज्ञाकारिता से कैसे संबंधित हैं।

5. काम।

क. आज्ञाकारिता में अच्छे काम आवश्यक रूप से सम्मिलित हैं।

१) क्योंकि परमेश्वर ने अपने बर्तनों (बर्तन धर्मविज्ञान) के माध्यम से काम करना चुना है, अच्छे काम परमेश्वर को जानने से जुड़े हैं।

२) वास्तव में, परमेश्वर के साथ संबंध जिसके परिणामस्वरूप अच्छे काम नहीं हैं, तो वह कोई संबंध नहीं है।

चर्चा विषय

पिछली अवधारणा पर चर्चा करने के लिए निम्नलिखित पद्यों का प्रयोग करें: याकू. २:२०, यिर्म. २२:१६, तीतु. १:१६, और यूह. ५:३६।

ख. सबसे महत्वपूर्ण अच्छा काम जो हम कर सकते हैं वह है परमेश्वर के साथ समय बिताना।

१) यूह. ६:२८, २९ का अध्ययन करें। स्मरण रखें कि "प्रतीति" करना सीधा परमेश्वर के साथ संबंध से जुड़ा है (इब्रा. ११:६)।

टिप्पणियाँ -

२) परमेश्वर के साथ बिताया गया यह समय घनिष्ठ और व्यक्तिगत होना चाहिए। यह दिखावटी और संस्थागत नहीं हो सकता।

३) परमेश्वर के साथ बिताए हमारे समय के तीन तत्व: निजी, सार्वजनिक, व्यापक।

क) परमेश्वर के साथ बिताया गया हमारा समय **निजी** होना चाहिए।

(१) यीशु का पिता के साथ एक निजी संबंध था (देखें लुका ५:१६; ४:४२; मर. १:३५; और मत्ती १४:२३)।

(२) हमारे साथ अकेले रहने की परमेश्वर की इच्छा को गोपनीयता के संदर्भ में भी समझा जा सकता है (मत्ती ६:१-६ देखें)।

(३) सबसे अच्छे मित्रों को अक्सर उन चुनिंदा लोगों के रूप में परिभाषित किया जाता है जो आपके सबसे क़ीमती रहस्यों को साझा करते हैं।

(४) यह सोचना नम्र होना है कि परमेश्वर हमसे यही चाहता है। यह सोचकर नम्रता आती है कि परमेश्वर हमारा सबसे अच्छा मित्र बनना चाहता है।

ख) परमेश्वर के साथ बिताया गया हमारा समय **सार्वजनिक** भी होना चाहिए।

(१) हमें वही गलती करने से बचना चाहिए जो पतरस ने की थी। परमेश्वर के साथ घनिष्ठ संबंध का सार्वजनिक पहलू होना चाहिए।

(२) परमेश्वर को जानने और उसके साथ सार्वजनिक संबंध रखने के बीच जोड़ पर विचार करें (लूका २२:३४)। (मत्ती १०:३२, ३३ भी देखें।)

(३) उसकी सार्वजनिक घोषणा में, हम उसके प्रति अधिक समर्पित होते हैं, और हम उसे और अधिक जानने लगते हैं।

(४) जितना बेहतर या अधिक आप उसे जानते हैं, उतना ही बेहतर या अधिक आप उसका दूसरों को बताएँगे। जितना बेहतर या अधिक आप उसका दूसरों को बताते हैं, उतना ही बेहतर या अधिक कि आप उसे जान पाएँगे।

टिप्पणियाँ -

ग) परमेश्वर के साथ बिताया गया हमारा समय **व्यापक** होना चाहिए।

(१) मात्रा में व्यापक।

(क) हमें **हर** समय प्रार्थना करने के लिए (१ थिस्स. ५:१७; इफि. ६:१८) और अपनी **सभी** चीज़ों में उसे स्वीकार करने के लिए कहा गया है (नीतिवचन ३:६)।

(ख) परमेश्वर को जानने के मार्ग (या पथ) पर व्यक्ति के लिए परमेश्वर को पहचानने की स्थिरता सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिए।

(२) गुणवत्ता में व्यापक।

(क) प्रेरितों के काम २:४२ का अध्ययन करें और वर्णित चार तत्वों पर विचार करें (प्रार्थना, संगति, बाईबल अध्ययन, और प्रभु भोज या धन्यवाद और स्तुति करना)।

(ख) "परमेश्वर को जानना II" पाठ्यक्रम इन तत्वों की विस्तार से जाँच करता है। आइए अब संक्षेप में इन गतिविधियों का उल्लेख करें।

(ग) प्रार्थना परमेश्वर को जानने में प्राथमिक उपकरण या गतिविधि है। प्रार्थना में जाना उस जगह जाने से कम नहीं है जहाँ यीशु पहले से है (इब्रा. ७:२५)।

(घ) स्तुति और आराधना और परमेश्वर को जानना अविभाज्य हैं। स्तुति परमेश्वर की बड़ाई करती है। किसी प्रकार यह हमारे सीमित दिमाग़ को परमेश्वर की असीम प्रकृति के एक कदम और करीब ले जाता है।

(ङ) उन लोगों के साथ संगति करना जिनके पास मसीह है, स्वयं मसीह के साथ संगति करने का एक वास्तविक तरीका है।

(च) बाईबल अध्ययन एक बौद्धिक अभ्यास से बढ़कर है। अतीक बातों को केवल आत्मिक दिमाग़ ही समझ सकता है। बाईबल अध्ययन वचन का अध्ययन है। यह स्वयं यीशु का अध्ययन है।

टिप्पणियाँ -

चर्चा विषय

परमेश्वर के साथ समय बिताने के निजी, सार्वजनिक और व्यापक तत्वों पर चर्चा को बढ़ावा देने के लिए पिछली अवधारणाओं का उपयोग करें।

ङ. रवैया

१. विनम्रता का रवैया।

क. कुछ **रवैये** हैं जो हमारे जीवन में "**होने**" चाहियें **(परमानंद)**। (पाठ्यक्रम देखें जिसका नाम है "पहाड़ी उपदेश" मत्ती ५-७)। पहला परमानंद हमें नम्रता का रवैया रखने के लिए प्रोत्साहित करता है।

१) हमारा व्यवहार हर कदम पर परमेश्वर के साथ हमारे चलने को प्रभावित करता है। उदाहरण के लिए, ध्यान दें कि कैसे नम्रता परमेश्वर को जानने के हमारे जागरूकता स्तर को प्रभावित करती है (भज. २५:९)।

२) नम्रता के बिना मनुष्य परमेश्वर को नहीं जान सकता। परमेश्वर को जानने के लिए हमें इतना विनम्र होना चाहिए कि हम स्वयं के लिए मर सकें और परमेश्वर के लिए जी सकें। हमें मसीह को धारण करना चाहिए। केवल आत्मा के गरीब ही ऐसा कर सकते हैं क्योंकि केवल आत्मा में गरीब (खाली) ही इसके लिए उपलब्ध हैं।

३) एक बर्तन को किसी अन्य चीज से भरने से पहले खाली करना पड़ता है (२ तीमु. २:२०, २१)। परमेश्वर को जानने का तरीका यीशु द्वारा भरना है। परमेश्वर यीशु से भरने के लिए खाली (विनम्र) बर्तन खोज रहा है।

ख. पहले के कथन को स्मरण करें, "जितना अधिक मैं सीखता हूँ उतना ही अधिक मैं खोजता हूँ कि मैं क्या नहीं जानता।" इस टिप्पणी के भीतर नम्रता का भाव है।

१) परमेश्वर को जानने के मार्ग (या पथ) पर भी ऐसा ही प्रभाव है (यूह. ९:३९-४१ को नम्रता के रवैये से संबंधित मानें)।

टिप्पणियाँ -

२) कुछ हद तक, परमेश्वर को जानने की प्रक्रिया उसके असीम होने को जानने की प्रक्रिया बन जाती है। वास्तव में, परमेश्वर को जानने का एक बड़ा भाग यह जानना है कि उसके साथ संबंध में हम कौन हैं।

क) हमें अपने छोटेपन, अपनी अपर्याप्तता, अपनी परिमितता, अपनी असिद्धता, अपनी व्यर्थता, अपनी निराशा (उसके अलावा) का एहसास होना चाहिए; ताकि हम देखना आरम्भ कर सकें: उसकी महानता, उसकी पर्याप्तता, उसकी असीमता, उसकी सिद्धता, उसकी प्रभावशीलता और उसकी आशा।

ख) उसकी सिद्ध सामर्थ को देखने के लिए, हमें अपनी कमजोरी को देखना चाहिए (२ कुरिं. १२:९)।

चर्चा विषय

ऊपर सूचीबद्ध विभिन्न बिंदुओं की चर्चा को बढ़ावा देने के लिए निम्नलिखित आरेख का उपयोग करें।

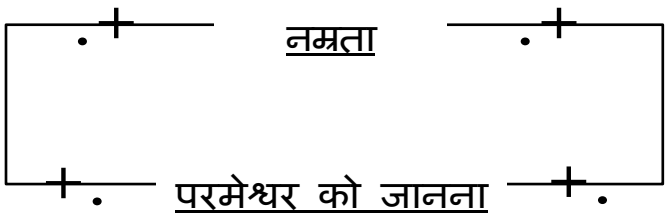

नोट: नम्रता का रवैया हमें परमेश्वर के पास ले जाएगा। तब हम परमेश्वर को जान पाएंगे। हम जितना अधिक परमेश्वर को जानेंगे, परमेश्वर उतना ही बड़ा होता जाएगा। परमेश्वर जितना बड़ा होता जाएगा, हम उतने ही विनम्र होते जाएँगे। हमारे पास जितनी अधिक विनम्रता होगी, हम उतना ही अधिक परमेश्वर के पास आएँगे। जितना अधिक हम परमेश्वर के पास आते जाएँगे, उतना ही अधिक हम उसे जान पाएँगे, आदि।

टिप्पणियाँ -

चर्चा विषय

चर्चा जारी रखने के लिए निम्नलिखित आरेख का प्रयोग करें।
सबसे पहले, उस सिद्धांत का अध्ययन करें यूह. ३:३० में पाया जाता है (हम में से केवल एक ही बढ़ सकता है, दूसरे को कम होना चाहिए)।

स्वयं की धारणा	परमेश्वर की धारणा	ज्ञान की स्थिति
		ज्ञान में कम हों जिससे परमेश्वर छोटा हो जाता है क्योंकि तुम बड़े हो
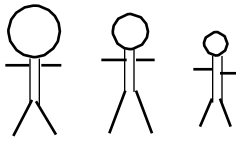	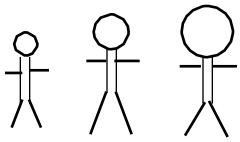	ज्ञान में बढ़ते जाओ जिससे परमेश्वर बड़ा हो जाता है क्योंकि तुम छोटे हो जाते हो —

ग. हमारी नम्रता परमेश्वर और मनुष्य के बीच संबंध के बाईबल आधारित नमूने के अनुरूप है।

१) हम परमेश्वर को कैसे जानते हैं, इसका वर्णन करने के लिए बाईबल चार मुख्य उपमाओं को प्रस्तुत करती है:

क) एक बेटा अपने पिता को जानता है।

ख) एक पत्नी अपने पति को जानती है।

ग) एक प्रजा अपने राजा को जानती है।

घ) एक भेड़ अपने चरवाहे को जानती है।

२) उदाहरण के लिए, भज. १००:३ पर विचार करें।

३) बाईबल की सभी उपमाएँ जानने वाले की ओर इशारा करती हैं जो उसकी ओर देख रहा है जिसे जाना गया है। वे सभी जानने वाले की नम्रता और अधीनता पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

टिप्पणियाँ -

२. परमेश्वर का भय।

क. नम्रता का रवैया परमेश्वर की सही धारणा उत्पन्न करता है। वह एक बड़ा और अद्भुत परमेश्वर है। इस प्रकार, परिणाम भय (सम्मान, विस्मय) का रवैया है।

१) ऊपर, हमने देखा कि हम परमेश्वर को कैसे जानते हैं, इसके विषय में बाईबल की उपमाओं में से एक यह है कि एक पत्नी अपने पति को जानती है। इसे ध्यान में रखते हुए, इफि. ५:३३ पर विचार करें।

२) इसके अलावा, यशा. ११:२, नीति. १:७, और भज. २५:१२, १४ में परमेश्वर के ज्ञान और परमेश्वर के भय के बीच मजबूत संबंध पर ध्यान दें।

ख. परमेश्वर को जानने के मार्ग (या पथ) पर चलने के लिए सम्मानजनक भय का रवैया आवश्यक है।

चर्चा विषय

परमेश्वर को जानने के विषय में चर्चा करने के लिए पिछली अवधारणाओं का उपयोग करें क्योंकि यह परमेश्वर का सम्मानजनक भय रखने से संबंधित है।

३. कष्ट।

क. चूँकि "यहोवा का भय मानना बुराई से बैर रखना है" (नीतिवचन ८:१३), वह व्यक्ति जो परमेश्वर को जानना चाहता है उसे पाप से बचना चाहिए। हम पाप से कैसे बचें? ऐसा करने का एक तरीका है कष्ट उठाने का रवैया रखना।

ख. इब्रा. ५:७, ८ की समीक्षा करें और पाप से बचने के लिए यीशु ने कैसे कष्ट सहे, इस सन्दर्भ से संबंधित हमारे पिछले अध्ययन को स्मरण करें। यीशु के पास एक कष्ट उठाने वाले का रवैया था।

ग. पौलुस ने इस संबंध को समझा और यही रवैया रखना चाहता था (फिलि. ३:१०)। वह उस ज्योति (ज्ञान) को प्राप्त करना चाहता था जो कष्ट से आती है (देखें अय्यूब ३:२०)।

टिप्पणियाँ -

घ. पतरस ने कहा कि हमें "मसीह के दुखों में सहभागी होना चाहिए" (१ पत. ४:१२, १३)।

१) ध्यान दें कि यह घोषणा कैसे १ पत. ४:१ के संदर्भ में की गई है। पाप से बचने के लिए कष्ट उठाने का रवैया उपयोग किया गया है। पाप से बचना परमेश्वर का भय मानने से जुड़ा है। परमेश्वर का भय मानना नम्रता का परिणाम है।

२) इस प्रकार, हम परमेश्वर को जानने के लिए मार्ग (या पथ) पर पहले तीन रवैयों के बीच संबंध देखते हैं।

४. पश्चाताप।

क. यीशु को इस अंतिम रवैये को (स्वयं के लिए) रवैयों की उस सूची में सम्मिलित करने की आवश्यकता नहीं थी जिसे हम विकसित कर रहे हैं।

ख. उसकी हर चीज में परीक्षा हुई। इस प्रकार, उसे विनम्रता, भय और कष्ट उठाने के रवैये की आवश्यकता थी। तौभी वह निष्पाप था (इब्रा. ४:१५)। उसे पश्चाताप के रवैये की आवश्यकता नहीं थी।

ग. हमारी भी सब बातों में परीक्षा होती है। फिर भी, हमने पाप किया है।

घ. इस प्रकार, हमें पश्चाताप का रवैया सम्मिलित करना चाहिए। पश्चाताप के रवैये के बिना हमारा सम्बन्ध हर पाप के बाद रुक जाएगा। हम परमेश्वर को जानने के मार्ग पर आगे नहीं बढ़ेंगे।

१) पश्चाताप करना उस दीवार से दूर हो जाना है जो हमारे और परमेश्वर के बीच खड़ी हो जाती है।

२) परमेश्वर को जानना उसकी ओर मुड़ना है (होशे ६:१, ३ पर विचार करें)।

५. अनंत रवैया।

क. अंत में, आइए हम सबसे महत्वपूर्ण रवैये पर विचार करें जो हमारे पास हो सकता है यदि हम परमेश्वर को जानना चाहते हैं। हम इसे **अनंत रवैया** कहेंगे।

ख. अपने मन को अनंत चीजों पर लगाना हमें उस अनंत के करीब लाता है। इस प्रकार, पौलुस हमें अपने मन को अनंत बातों पर लगाने के लिए निर्देश देता है (कुलु. ३:१, २; और २ कुरिं. ४:१८)।

टिप्पणियाँ -

ग. इसका एहसास होना कितनी अद्भुत बात है कि अनंत रवैया रखने के द्वारा हम वास्तव में परमेश्वर के कितने निकट हैं। हम वास्तव में अब स्वर्ग में मसीह के साथ रह सकते हैं (देखें कुलु. ३:१; १ कुरिं. १५:४८; इफि. १:३; इफि. २:६; और यूह. १४:३)।

१) वचन के अनुसार हम मसीह के साथ जी उठे हैं और हम उसके साथ स्वर्ग में बैठे हैं। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं होनी चाहिए, क्योंकि हम जानते हैं कि अनन्त जीवन (स्वर्ग) परमेश्वर को जानना (के साथ बैठना) है (देखें यूह. १७:३)।

२) हम उसके साथ बैठने की तुलना में परमेश्वर के और करीब नहीं हो सकते हैं। यह उतना ही करीब होना है जितना हम हो सकते हैं।

चर्चा विषय

१ कुरिं. १३ में एक अनंत रवैया विश्वास (विश्वास से हम परमेश्वर को जानते हैं: इब्रा. ११:६; फिलि. ३:९, १०), आशा, और विशेष रूप से प्रेम का रवैया है।

आपका किस प्रकार का रवैया है? क्या यह एक सांसारिक रवैया है जो इस दुनिया के प्रतिफलों पर केंद्रित है? या वह एक अनंत रवैया है जो अनन्त प्रतिफलों और उन चीज़ों पर केंद्रित है जो बनी रहेंगी?

छ. निष्कर्ष।

१. जैसे-जैसे हम परमेश्वर को जानने के मार्ग (या पथ) पर चलते हैं, हमारा संबंध और अधिक बढ़ता जाता है।

क. **जागरूकता** के स्तर पर, हम जानते हैं कि **मसीह जीवित है**। मसीह स्वर्ग में है और हम पृथ्वी पर हैं, पर हम उसके साथ संबंध रख सकते हैं।

ख. **गुणों** के स्तर पर, हम जानते हैं कि **मसीह हम में रहता है**। वह स्वर्ग में है, पर उसके आत्मा के द्वारा वह हम में रहता और हम उसमें रहते हैं।

ग. **कार्यों** के स्तर पर, हम जानते हैं कि **मसीह हमारे द्वारा कार्य करता है**। वह अभी भी अपने लोगों के साथ घनिष्ठ संबंध के द्वारा पृथ्वी पर चलता है।

घ. **रवैये** के स्तर पर, हम जानते हैं कि **हम मसीह के साथ रहते हैं**। हम परमेश्वर को जानने के चरमोत्कर्ष पर पहुँच गए हैं। अविश्वसनीय रूप से, हम सांसारिक क्षेत्र को छोड़कर स्वर्ग में मसीह के साथ रहते हैं। परमेश्वर को जानते हुए हम अनन्त जीवन में जीते हैं।

टिप्पणियाँ-

२. परमेश्वर के साथ संबंध में बढ़ना एक अवर्णनीय आनंद है। निश्चय ही यह प्रत्येक मसीही विश्वासी के हृदय की पुकार है।

चर्चा विषय

आशा है, जब यह पाठ्यक्रम समाप्त होता है, हम सभी निम्नलिखित प्रार्थना के लिए प्रतिबद्ध हो सकते हैं:

मेरे परमेश्वर, मैं आपको और जानना चाहता हूँ।

मुझे आपको और जानने की आवश्यकता है। मुझे आपको और जानना है।

टिप्पणियाँ -

परमेश्वर को जानना I: अंत टिप्पणी

[1]जे. रोडमैन विलियम्स, बेसिक क्रिश्चियन थियोलॉजी: भाग एक - रीजेंट यूनिवर्सिटी कोर्स से कक्षा नोट्स (वर्जीनिया बीच, वीए: सीबीएन यूनिवर्सिटी मीडिया सेंटर, १९८६)। पाठ्यक्रम के इस भाग में रूपरेखा के प्रमुख बिंदुओं का प्रवाह सीधे डॉ. विलियम्स की शिक्षाओं से लिया गया है। अनुमति द्वारा उपयोग किया गया है।

टिप्पणियाँ -